3

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

प्रश्न-1

उत्तर:- समानता से आशय नागरिकों को प्राप्त समान अधिकारों, समान विकास के अवसरों और अवसर की समानता से है।

समानता के प्रकार – नागरिक समानता, राजनीतिक समानता आदि

प्रश्न-2

उत्तर:- उदारवाद की विशेषताएं–

1. व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं मौलिक अधिकारों को प्राथमिकता

2. राज्य का कार्यक्षेत्र न्यून, नागरिक प्रतिस्पर्धा को खुली छूट

प्रश्न-3

उत्तर:- "कानून सम्प्रभु राज्य का आदेश है, जिसमें दण्डाधिकार निहित होता है।"

प्रश्न-4

उत्तर:- समाजवाद से आशय उत्पादन एवं वितरण के साधनों पर व्यक्तिविशेष का नहीं अपितु राज्य का आधिपत्य होना है। यह नागरिक स्वतंत्रता व लोकतंत्र एवं समानता पर बल देता है।

प्रश्न - 5

उत्तर :- लोककल्याण कारी राज्य वह राज्य है जो नागरिकों को न्यूनतम जीवन स्तर (रोटी, कपड़ा-मकान) की गारंटी प्रदान करता है। उन्हें मौलिक अधिकार प्रदान करता है, तथा समानता पर बल देता है। सामान्य शब्दों में जन-कल्याण नियोजनकारी राज्य ही लोककल्याण कारी राज्य है।

प्रश्न - 6

उत्तर :- वयस्क मताधिकार से आशय कानूनन रूप से वयस्क नागरिकों को मत देने के अधिकार से है। विभिन्न राज्यों में वयस्कता की आयु अलग-अलग निर्धारित है। इंग्लैण्ड, अमेरिका, भारत में वयस्क मताधिकार की आयु 18 वर्ष है।

प्रश्न - 7

उत्तर :- हित समूह वे संगठन या समूह होते हैं जो अपने सीमित उद्देश्यों या स्व हितों की साधना हेतु सरकार पर दबाव बनाये रखते हैं। हित समूह चुनाव में अपने प्रत्याशी नहीं उतारता अपितु सरकार पर अप्रत्यक्ष दबाव बनाता है।
उदाहरण :- शिक्षक संघ, व्यापारी संगठन ---।

BSEMP

कुल के अंकों का योग

प्रश्न-8
उत्तर:- मानव अधिकार दिवस "10 दिसम्बर" को मनाया जाता है।

प्रश्न-9
उत्तर:- अलगाव वाद का शाब्दिक अर्थ अलग या पृथक होने की भावना से है। सामान्य अर्थ में धर्म, संस्कृति, भाषा-जाति आदि के मतभेद से नागरिकों में मतभेद एवं पृथक करण की भावना ही अलगाववाद है। ये हिंसा एवं सांप्रदायिकता का कारण बनती है।

प्रश्न-10
उत्तर:- भारत की गुटनिरपेक्षता से आशय किसी भी महाशक्ति के गुट में शामिल न होकर स्वतंत्र रूप से अपनी विदेश नीति का संचालन करना है।
वर्तमान में भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रमुख राष्ट्र है, एवं तीसरी दुनिया का नेतृत्व कर रहा है।

कृ.पृ.उ.

6 | 20 | + | | = | |
योग पूर्व पृष्ठ | | | पृष्ठ 9 के अंक | | कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न - 11

उत्तर:- धार्मिक स्वतंत्रता का अर्थ निम्न तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है—

1. राज्य द्वारा किसी धर्म को राष्ट्रीय धर्म घोषित न करना।
2. राज्य के नागरिकों को अपना धर्म मानने, उसका प्रचार करने की स्वतंत्रता देना।
3. राज्य द्वारा समस्त धर्मों को समानता प्रदान करना।

---

प्रश्न - 12

उत्तर:- राष्ट्रीय स्वतंत्रता को निम्न तथ्यों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

1. राष्ट्र में सम्प्रभु सरकार उस राष्ट्र के नागरिकों की हो।
2. राष्ट्र के नागरिकों को समानता-स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार प्राप्त हों।
3. राष्ट्र को नियम-कानून बनाने, कार्यवाही करने में स्वतंत्र हो।

---

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

प्रश्न-13
उत्तर:- लोक कल्याणकारी राज्य की विशेषतायें—

1. नागरिकों को न्यूनतम जीवन स्तर की गारंटी:-
लोककल्याण कारी राज्य नागरिकों को न्यूनतम जीवन स्तर (रोटी, कपड़ा, मकान) की गारंटी देता है।

2. विकास के अवसर प्रदान करना:-
यह राज्य नागरिकों को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक विकास के अवसर प्रदान करता है।

3. नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान करना:-
यह राज्य नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता आदि मौलिक अधिकार प्रदान करता है।

---

प्रश्न-14
उत्तर:- राजनैतिक दलों के कार्य—

1. राजनीतिक दल सरकार पर दबाव बनाये रखते हैं। वाद-विवाद, विचार-विमर्श करते हैं।

2. ये दल सरकार बनाने में प्रयासरत रहते हैं सरकारी तंत्र की बुराईयों को उजागर कर जनमत अपने पक्ष में बनाते रहते हैं।

3. राजनीतिक दल सरकारी नीतियों, कार्यों की समालोचना करते हैं।

---

पृष्ठ के अंकों का योग [ ]

प्रश्न-15

उत्तर:- भारत में मानव अधिकारों की स्थिति-

• भारत में संविधान ने नागरिकों को मानव अधिकार प्रदान किये है। संविधान ने उन्हें विशेष स्थान तथा मौलिक अधिकार के रुप में प्रस्तुत किया है- समानता, स्वतंत्रता, शोषण के विरुद्ध, संस्कृति व शिक्षा, धार्मिक स्वतंत्रता व संविधानिक उपचार के अधिकार समस्त नागरिकों को प्रदत्त हैं।

• इन अधिकारों के संरक्षण हेतु मानवाधिकार आयोग का गठन किया गया है।

• न्यायालय इन अधिकारों का परम संरक्षक है। यदि कोई ऐसा कानून जो मौलिक अधिकारों की अवहेलना करता है तो न्यायालय उसे अमान्य कर सकता है।

प्रश्न-16

उत्तर:- भारतीय लोकतंत्र की समस्यायें -

I. असमानता :-

भारत में व्याप्त असमानता लोकतंत्र में बाधक है। भारत में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक असमानता व्याप्त है जो लोकतंत्र को प्रभावित करती है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

9 | | + | | = 3 | 2 | 6

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 9 के अंक — कुल अंक

2. निरक्षरता:-

भारत की अधिकतम जनसंख्या निरक्षर है। निरक्षरता के कारण नागरिकों में नागरिक-चेतना का अभाव बना रहता है इससे लोकतंत्र प्रभावित होता है।

3. सांप्रदायिकता, जातिवाद, हिंसा:-

भारत में विभिन्न धर्म व जाति के लोग है। धार्मिक मतभेद से सांप्रदायिक दंगे, जातिवाद से पिछड़ापन तथा विभिन्न हिंसा से लोकतंत्र प्रभावित है।

3

प्रश्न-17

उत्तर:- भारत की विदेश नीति के लक्ष्य—

1. विश्व शांति की स्थापना:-

भारत शांति का समर्थक है तथा युद्धों का विरोध करता आया है। वह विश्व शांति हेतु प्रयासरत है।

2. अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं मैत्री:-

भारतीय विदेश नीति सभी राष्ट्रों से सद्भावना व मैत्री हेतु प्रयासरत रही है। वह पूँजीवादी, या अन्य साम्यवादी राष्ट्रों से मित्रता बनाये रखता है।

3. निःशस्त्रीकरण के प्रयास:-

भारतीय विदेश नीति का लक्ष्य निः-

निःशस्त्रीकरण की स्थापना हो। वह स्वयं निःशस्त्रीकरण की नीति अपना रहा है तथा सम्पूर्ण विश्व में इसका प्रसार कर रहा है।

3

प्रश्न-18

उत्तर :- निःशस्त्रीकरण का अर्थ शस्त्रों की होड़ को कम करके घातक हथियारों के निषेध से है। सामान्यत: राज्य सुरक्षा हेतु सीमित हथियारों की व्यवस्था रखे, आक्रमण हेतु नहीं, यही निःशस्त्रीकरण है।

वर्तमान में निःशस्त्रीकरण की आवश्यकता:-

1. विश्व शांति एवं युद्धों से रक्षा हेतु।

2. युद्ध सामग्री का व्यय कम कर नागरिक विकास, औद्योगिक विकास हेतु निःशस्त्रीकरण आवश्यक है।

3. पर्यावरण सुरक्षा, प्रदूषण मुक्ति व अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में माधुर्य के लिये निःशस्त्रीकरण आवश्यक है।

3

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न-19

उत्तर:- संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का योगदान —

1. विश्व शांति, नि:शस्त्रीकरण के कार्यक्रमों में:-

भारत सं॰रा॰सं॰ के सिद्धांतों का समर्थन करते हुये विश्व शांति, सहयोग एवं नि:शस्त्रीकरण के नियमों का प्रचार प्रसार करता है तथा महासभा, सुरक्षा परिषद आदि में इन बिषयों की पहल करता है

2. संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न अंगों में भारत का योगदान:-

संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद में भारत कई बार अस्थाई सदस्य रह चुका है। महासभा की नीति निर्धारण में भारत अपनी राय प्रकट करता है। भारत की श्री मति विजयलक्ष्मी पण्डित महासभा की अध्यक्ष, श्री राधाकृष्णन यूनेस्को प्रमुख, श्री आर॰ एस॰ पाठक अंतरर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीस रह चुके हैं।

3. नये सदस्य राष्ट्रों के प्रवेश हेतु:-

भारत के प्रयासों से कई सदस्य राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र संघ में शामिल हो सके हैं। अमेरिका तथा रूस प्रारंभ में अपने विरोधी किसी राष्ट्र को सं॰रा॰सं॰ की सदस्यता ग्रहण न करने देता था, परन्तु भारत के प्रयासों से कई नवस्वतंत्र राष्ट्रों ने सदस्ता ग्रहण कर सह सकी।

कृ॰पृ॰उ॰

5. अंतर्राष्ट्रीय विवादों के समाधान में :-

भारत ने कोरिया और चीन के युद्ध विवाद, हिन्द-चीन संबंधी विवाद और कांगो समस्या में संयुक्त राष्ट्र संघ की सहायता की है।

प्रश्न-20

उत्तर:- प्रत्यक्ष मतदान प्रणाली के गुण-

1. जनता का राजनीतिक तथ्यों में भागीदार होना:-

प्रत्यक्ष मतदान प्रणाली में जनता राजनीतिक तथ्यों, कार्यों में सहभागी होती है, इससे जनभावना का आदर होता है।

2. लोकतंत्र के अनुरूप:-

प्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली में जनता को मत देने का अधिकार अर्थात अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होती है। जो लोकतंत्रीय भावना के अनुकूल है।

3. भ्रष्टाचार में कमी :-

प्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली में बहुसंख्यक जनता मत देती है। इस कारण बहुसंख्यकों के मतों को खरीद पाना या भ्रष्टाचार

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(13) [ ] + [ ] = [ 47 ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 13 के अंक   कुल अंक

कम होता है।

5. प्रत्याशियों का जनता से प्रत्यक्ष संपर्क :-

इस मत प्रणाली में प्रत्याशी जनता से सीधा संपर्क बनाते हैं। उनकी समस्यायें सुनते व निराकरण करते हैं, क्योंकि जनता ही उनकी भाग्य विधाता होती है।

प्रश्न-21

उत्तर :- हित समूहों (दबाव समूहों) के दोष —

1. संकीर्ण विचारधारा :-

हित समूहों का निर्माण संकीर्ण विचारधारा के आधार पर होता है। वे अपने स्वार्थों एवं व्यक्तिगत हितों की पूर्ति हेतु हित समूहों का निर्माण किया करते हैं। अतः यह दोष पूर्ण है।

2. सरकारी नीतियों में बाधक :-

दबाव (हित समूह) सरकारी नीतियों में अवरोध एवं प्रभाव पैदा करते हैं। यदि सरकारी नीतियाँ जनहितकारी भी हो, पर केवल हित समूहों का स्वार्थ सिद्ध न हो तो वो ऐसी जनहितकारी सरकारी नीतियों पर अड़चनें पैदा करने लगते हैं। इससे देश का विकास अवरुद्ध होता है।

कृ.प.उ.

3. सरकार पर अनियन्त्रित दबाव :-

हित समूह परोक्ष रूप से सम्पूर्ण तंत्र व सरकार पर दबाव बनाये रखते है। इससे सरकार स्वतंत्र होते हुए भी इनके अधीन रहती है, जिससे सरकारी कामगाजी प्रभावित होती है।

4. हितों की साधना हेतु गलत तरीकों का प्रयोग :-

हित समूह अपने हितों की पूर्ति करवाने हेतु हिंसा, उग्रवाद जैसी अलोकतांत्रित गतिविधियाँ पैदा करते हैं। साथ ही ये नेताओं के साथ रिश्वतखोरी आदि के माध्यम से भ्रष्टाचार मचाते हैं।

प्रश्न- 22

उत्तर :- प्रत्यक्ष मतदान प्रणाली के दोष :-

1. अयोग्य उम्मीदवार का चुनना :-

प्रत्यक्ष मतदान में अकसर अयोग्य उम्मीदवार चुनकर आजाते है, क्योंकि जनसामान्य देश की राजनीतिक, सामाजिक घटनाओं से परिचित नही होता अतः वह भाषणों, चुनाव-प्रचारों में फसकर गलत मतदान कर देता है।

BSEMP

(15) [ ] + [ ] = [ 50 ]
योग पूर्व पृष्ठ    पृष्ठ 15 के अंक    कुल अंक

2. चुनावी माहौल का दूषित होना:-

प्रत्यक्ष निर्वाचन में प्रचार प्रसार, दूषित एवं असभ्य वातावरण से चुनावी माहौल सम्पूर्णतया दूषित हो जाया करता है।

3. आर्थिक अपव्यय:-

इस प्रणाली में राज्य द्वारा मतदाता सूची निर्माण, मतदान केन्द्रों की स्थापना आदि में बहुत आर्थिक अपव्यय किया जाता है, तथा चुनावी दल भी काफी प्रचार प्रसार में धन खर्च करते हैं, जिससे आचार-संहिता का उल्लंघन होता है, साथ ही देश का विकास बाधित होता है।

4. सभ्य एवं शिष्टाचारियों का चुनाव में खड़ा न होना:-

प्रत्यक्ष मत प्रणाली प्रणाली में अत्यधिक आर्थिक अपव्यय, भ्रष्टाचार, हिंसा, दूषित भाषणबाजी के कारण सभ्य एवं बौद्धिक वर्गीय लोग प्रत्याशी के रूप में चुनावों में खड़े नहीं होते।

कृ.प.उ.

प्रश्न 23

उत्तर:- ~~स्वज~~ स्वस्थ जनमत निर्माण हेतु शर्तें:-

1. शिक्षा का प्रचार :-
शिक्षा से नागरिकों में राजनीतिक चेतना एवं जनभागीदारी का विकास होता है। वे नियमों, नीतियों का आकलन कर सकते हैं। जिसमें वे जनमत निर्माण को में स्वस्थ भागीदारी निभाते हैं।

2. मीडिया (समाचार पत्र, न्यूज़ चैनल्स, रेडियो) की निष्पक्षता:-
स्वस्थ जनमत निर्माण में मीडिया की निष्पक्षता परमावश्यक है। मीडिया के माध्यम से जनमत निर्माण होता है. अतएव मीडिया बिना किसी दबाव में स्वस्थ जनमत निर्माण करे।

3. राजनीतिक दलों की सक्रियता :-
जनमत निर्माण में राजनीतिक विपक्षी दल भूमिका निभाते हैं। वे सक्रीय रूप से सरकार की कमियों से जनता को आगाह करते रहें तो ~~स्व~~ स्वस्थ जनमत निर्माण होता है।

4. जनचेतना एवं जनता में भागीदारी भावना:-
स्वस्थ

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

लोकमत तभी निर्मित हो सकता है जब जनता स्वयं राजनीतिक चेतन शील व भागीदार होगी।

प्रश्न-24
उत्तरः- संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख उद्देश्य-
1. अंतर्राष्ट्रीय शांति की स्थापना करना संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रथम और आवश्यक उद्देश्य है। युद्ध से विश्व की सुरक्षा करना उसका उद्देश्य बना हुआ है।

2. अंतराष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण तरीकों से सुलह करना संयुक्त राष्ट्र संघ का उद्देश्य है, इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु महासभा, सुरक्षा परिषद व अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय कार्यरत है।

3. निःशस्त्रीकरण को विश्व आंदोलन बनाना तथा विश्व में निःशस्त्रीकरण स्थापित करना सं॰रा॰सं॰ का उद्देश्य है।

4. राष्ट्रों की आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, शिक्षा की उन्नति करना संयुक्त राष्ट्र संघ का उद्देश्य है।

कृ.प.उ.

(18) 56 + ☐ = ☐

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 18 के अंक | कुल अंक

~~प्रश्न २५~~

~~उत्तरः- " संवैधानिक अधिकारों~~ ~~उपचारों का~~

प्रश्न - २५

उत्तरः- "संवैधानिक ~~आ~~ उपचारों का अधिकार" संविधान की ह्रदय व आत्मा है।" भारतीय संविधान ने नागरिकों को छः मौलिक अधिकार- समानता, स्वतंत्रता, शोषण के विरुद्ध, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, शिक्षा व संस्कृति का अधिकार तथा संविधानिक उपचारों के अधिकार दिये गये हैं। उपरोक्त अधिकारों में संविधानिक उपचारों का अधिकार ~~इस~~ इन सब अधिकारों का संरक्षक है। वहीं संविधान पवित्र संविधान माना गया है जिसमें मौलिक अधिकारों का सर्व संवर्धन निहित हो।

☆

संविधानिक उपचारों का अधिकार संविधान द्वारा नागरिकों के अधिकारों की अवहेलना से बचाना है।

☆

संविधान की पवित्रता हेतु यह आवश्यक है कि- वह नागरिक अधिकारों को संरक्षण प्रदान करें।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

☆

संविधान का उद्देश्य नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है। अतः ~~कह~~ यह अधिकार संविधान के इस उद्देश्य की पूर्ति करता है।

☆

संविधान एक नियमावली है जिसका ~~उद्देश~~ उद्देश्य नागरिक अधिकारों की रक्षा है। यदि नागरिक अधिकारों की किसी भी प्रकार से अवहेलना होती है तो उपचारों का अधिकार उन्हें संरक्षण प्रदान करता है।

उपर्युक्त तर्कों से स्पष्ट है कि संविधान का मूल भाव नागरिक अधिकारों की रक्षा है। यह अधिकार उस उद्देश्य की पूर्ति करता है। अतः कहा जाता है "संवैधानिक उपचारों का अधिकार संविधान का हृदय व आत्मा है।"

---

प्रश्न - 26

उत्तर :- राज्य मानव अधिकार आयोग के कर्तव्य -

1. पीड़ित की याचिका की जाँच करना। उस पर कार्यवाही करना राज्य मानवाधिकार आयोग का कर्तव्य है।

2. यदि किसी शासकीय अधिकारी द्वारा पीड़ित के अधिकारों की अवहेलना की जाती है तो उसकी ~~व्यवस्थित~~ व्यवस्थित जाँच व कार्यवाही करना इसका कर्तव्य है।

3. जेल, सुधार-गृहों, अस्पतालों आदि में निरीक्षण करना तथा मानव अधिकारों संबंधी संस्तुति प्रदान करना।

4. मानवाधिकार संबंधी शिक्षा का प्रचार प्रसार करना।

5. मानवाधिकारो का मीडिया पर प्रसारण कर जन चेतना का विकास करना।

6. मानवाधिकार संवर्धन के कार्यक्रम कैम्प चलाना।

---

B S E M P

प्रश्न-२७

उत्तर:- असमानता लोकतंत्र में बाधक है, क्योंकि जहाँ-जहाँ नागरिक में ऊँच-नीच, गरीबी-अमीरी का भेद है न तो वहां जन चेतना का विकास हो पाता है और न ही स्वस्थ लोकतंत्र का विकास हो पाता है। असमानता निम्न तथ्यों के आधार पर लोकमत को प्रभावित करती है-

~~1. आर्थिक असमानता से शोषण~~

1. आर्थिक असमानता से आर्थिक रूप से कमजोर नागरिक शिक्षा, स्वास्थ्य से वंचित

पृष्ठ के अंकों का योग

रह जाते हैं। वे देश के नागरिक होते हुए भी पिछड़े बने रह जाते हैं जिससे लोकतंत्र सफल नहीं हो पाता।

2. शासन तंत्र में पूँजीपतियों के वर्चस्व से कमजोर वर्ग की उपेक्षा होती है। यह असमानता लोकतंत्र में बाधक है।

3. सामाजिक असमानता — जातिगत ऊँच-नीच से निम्न-वर्गीय दलित पिछड़े रह जाते हैं।

4. दलित जातियों, पिछड़े वर्गों, अछूतों के पिछड़े पन से लोकतंत्र में सवर्णों की सत्ता चलती है, जिससे सफल लोकतंत्र स्थापित नहीं हो पाता।

5. असमा। असमानता के कारण पिछड़े वर्ग, गरीब, दलित जनचेतना से दूर रहते हैं न तो वे सरकारी कामकाजों में रुचि लेते हैं, न ही देश विकास में।

"आर्थिक समानता के बिना राजनीतिक समानता व स्वतंत्रता व्यर्थ है। सामाजिक समानता के बिना राजनीतिक समानता व्यर्थ है। और राजनीतिक समानता और स्वतंत्रता के बिना लोकतंत्र व्यर्थ है।"

अतः कथन से स्पष्ट है कि सामाजिक व आर्थिक असमानता से राजनीतिक स्वतंत्रता व समानता नष्ट हो जाती है जिससे लोकतंत्र सफल नहीं हो पाता है।

B S E M P

(22) 67 + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 22 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न - 28

उत्तरः— भारत-बांग्लादेश संबंध—

★

बांग्लादेश 1971 के पूर्व पाकिस्तान का एक हिस्सा था और पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना जाता था। ~~भारत~~ परंतु वहाँ विद्रोह एवं भारत के हस्तक्षेप प्रयासोंसे 1971 में वह स्वतंत्रराष्ट्र बन गया। बांग्ला-देश को स्वतंत्र राष्ट्र बनाने में भारत का विशेष योगदान था। तत्कालीन प्रधानमंत्री के अनुसार उन्होंने बांग्लादेश और भारत के मधुर संबंध रखने की बात कही थी पर उनकी हत्या के उपरांत ही भारत-बांग्लादेश संबंधों में मत भेद पैदा होने लगे—

1. शरणार्थियों संबंधी मतभेदः—

बांग्लादेश के 1 करोड़ से ज्यादा नागरिक शरणार्थी के रूप में ~~a~~ भारत आ गये, जो बोझ बढ़ाने लगे उससे दोनों देशों में मतभेद पैदा होने लगे। बाद में बांग्लादेश ने अपने ~~शरणार्थियों~~ नागरिकों को वापस बुलाकर इस मतभेद पर सुलह किया।

RSEMP

23

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक 71

मध्यप्रदेश

2. ~~सीमा~~ तीन बीघा क्षेत्र संबंधी मतभेद :- भारत - बांग्लादेश की सीमा में तीन बीघा क्षेत्र भारत में शामिल है। परंतु उसका क्षेत्रफल बांग्लादेश की ओर कटाव में था जिससे बांग्लादेशी नागरिकों को आवागमन में असुविधा होती थी। अतएव भारत ने औपचारिक रूप से वह क्षेत्र बांग्लादेश को हस्तांतरित कर दिया।

3. गंगाजल विवाद :- गंगाजल के बटवारे संबंधी विवाद ने जोर पकड़ लिया अतएव विभिन्न समझौतों के आधार पर समयानुसार गंगाजल विभाजन किया गया।

BSEMP

☆ भारत की सहयोग नीति :-

1. भारत सदैव बांग्लादेश से मैत्री संबंध बनाना चाहता है। वहां जब भीषण बाढ़ आयी थी तब भारत ने वहां सहायता प्रदान की।

2. व्यापार, शिक्षा में भारत बांग्लादेश को सहायता प्रदान करता है।

के अंकों का योग

प्रश्न-29

उत्तर:- अधिनायक वाद के दोष —

(1.) लोकतंत्र का विरोधी:-

अधिनायकवाद में सत्ता अधिनायक के हाथ में होती है, जनता के हाथ में नहीं। अतः यहाँ तानाशाही हुआ करती है, जो लोकतंत्र विरोधी है।

(2.) नागरिक अधिकारों की उपेक्षा:-

अधिनायकवाद में नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता के अधिकारों का हनन होता है। यहाँ नागरिकों को मत देने, विचार व्यक्त करने, शोषण के विरुद्ध अपील करने का अधिकार नहीं होता है।

(3.) मीडिया (समाचार पत्रों, रेडियो आदि) पर पाबंदी:-

अधिनायकवादी शासन में मीडिया शासन के अधीन होती है। शासन कार्यों की समीक्षा या आलोचना का वहाँ विकास नहीं हो पाता है, जिससे जनता अपनी राय व्यक्त नहीं कर पाती है। इससे जनभावनाओं, नागरिक अधिकारों की उपेक्षा तो होती है साथ ही सरकारी कामगार कामकाजों की समालोचना नहीं हो पाती है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

2007 C.No.24022 पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक कोड नं. 242012
6. परीक्षा का नाम
7. विषय 8. माध्यम
8. दिनांक
पृष्ठ 25

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक 660178

1. परीक्षार्थी का रोल नम्बर (अंग्रेजी अंकों में)

| 2 | 7 | 2 | 4 | 5 | 2 | 8 | 6 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

2. रोल नम्बर शब्दों में

76

4. स्वेच्छाचारिता व तानाशाही :-

इस व्यवस्था में अधिनायक पूर्ण तानाशाह एवं स्वेच्छाचारी होता है उसका आदेश प्रथम व अंतिम होता है इससे जनता की उपेक्षा होती है।

5. हिंसा, साम्राज्यवाद :-

अधिनायक हिंसा का सहारा लेता रहता है। नागरिकों को दी जाने वाली सजा बहुत कठोर होती है। हिटलर छोटी-छोटी सी गलती पर मृत्यु दंड देता था। साथ ही यह शासन साम्राज्यवाद पिपासु रहता है। द्वितीय विश्व युद्ध का कारण यही था।

5

6. क्रांति की संभावना :-

इस तंत्र में जनता उपेक्षित होती रहती है, अतः अधिनायक से तंग जनता क्रांति का सहारा लेती है। जिससे राज्य के स्वरूप में फेरबदल होता है तथा भीषण हिंसा होती है।

BSEMP

अंकों का योग

पृ 26

| 56 | + | | = | |
|---|---|---|---|---|
| योग पूर्व पृष्ठ | | पृष्ठ 2 के अंक | | कुल अंक |

प्रश्न - 30
उत्तर:- निर्वाचन आयोग की गठन प्रक्रिया—

★ आयोग के सदस्यों की नियुक्ति:—

आयोग के सदस्यों एवं मुख्य निर्वाचन आयुक्त की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।

B S E M P

★ सदस्य संख्या:—

निर्वाचन आयोग में मुख्य निर्वाचन आयुक्त व अन्य सदस्य होते हैं। इनकी सदस्य संख्या निश्चित नहीं होती। समयानुसार राष्ट्रपति इनकी ~~सदस्त~~ सदस्य संख्या निर्धारित ~~करती है~~ करता है।

★ योग्यतायें :—

राष्ट्रपति इनकी योग्यतायें यथासमय निर्धारित करता है, क्योंकि चुनाव परिस्थितियों के अनुसार इनकी योग्यतायें पूर्व- निश्चित नहीं की जा सकती है।

★ पदविमुक्ति:—

(1.)
आयुक्त अपने ~~ह~~ पद को स्वेच्छा से त्याग-पत्र देकर त्याग सकते हैं।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = 80 कुल अंक

(2) इनकी पदविमुक्ति (अयोग्यता पर) हेतु वही प्रक्रिया अपनाई जाती है जो सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीस के लिये अपनाई जाती है।

★ वेतन भत्ते :–

इनके वेतन तथा भत्ते संसदानुसार निर्धारित किये जाते हैं।

इस प्रकार निर्वाचन आयोग का गठन होता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग